श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत

जो प्राणी सच्चे और शुद्ध मन से 'श्रीमहागणेश जी सिद्ध व्रत' करेगा, तथा उसके साथ इस व्रत का पाठ करेगा और अन्य व्यक्तियों को भी इस कथा का गुणगान करेगा। उस पर श्रीमहागणेश जी की अति कृपा अवश्य होगी। और उसे मनचाहा फल मिलेगा। इस व्रत के करने से तथा पुस्तक के पाठ द्वारा आपके भाग्य में निश्चित रूप से परिवर्तन होगा। इसमें तनिक भी संदेह न करे। परन्तु इसके लिए हर पाठक को व्रत करने की शास्त्रीय विधि एवं नियमानुसार पाठ करना होगा। जो सच्चे हृदय से इस व्रत को करता है। उसका भाग्य अवश्य ही सूर्य की भाँति चमक उठता है।

यह व्रत तुरन्त फल देता है, किन्तु यदि किसी व्यक्ति को फल न मिले तो उसे तीन माह के बाद फिर से यह व्रत शुरू करना चाहिए और जब तक फल न मिले तब तक निरन्तर हर तीन महीनें पर व्रत करते रहना चाहिए। निश्चित तौर पर देर से ही सही फल अवश्य मिलेगा।

व्रत प्रारम्भ करने की विधि

सर्व प्रथम 'श्रीमहागणेश सिद्ध यंत्र' को सामने रखकर और निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण कर श्रद्धापूर्वक 'श्रीमहागणेश सिद्ध यंत्र' को नमस्कार करे।

(इस पुस्तक में हमने 'श्रीमहागणेश सिद्ध यंत्र की फोटो दी हुई है)

यंत्र स्थापना मंत्रः-

एक दन्ताय विद्यमहे, वक्रतुण्डाय धीमही।
तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।।

अर्थ- जो परमात्मा, एकदन्त वक्रतुण्ड आदि अनेक नामों से जाना जाता है वह हमारी बुद्धि को सत्कर्मों में लगाये।

२. उसके उपरान्त श्रीमहागणेश जी की छवि को वंदन करें। बाद में 'ह्रीं गं गणपतये नमः। मंत्र का श्रद्धा से ग्यारह बार जप करें। इससे श्री गणेशजी अति प्रसन्न होते हैं। और पाठक की सर्वमनोकामना पूर्ण करते हैं।

३. व्रत करने वाला पाठक सुबह स्नान करके साफ कपड़े पहन कर पूर्व दिशा में मुख करके आसन पर बैठे। सामने एक लकड़ी की चौकी पर लाल कोरा कपड़ा रखे। रेशमी हो तो अति उत्तम। उस पर मुठ्ठी भर गेहूँ का ढेर रखे। उस पर तांबे की छोटी थाली रखकर उसमें श्री गणेश जी की मूर्ति या फोटो रखें। बाद में दीपक जलाएं। मूर्ति या फोटो के सामने तीन चाँदी के सिक्के रखें वह न हो तो कोई भी सिक्के रखें। सिक्के पर तीन सुपारी (बिना कटी) रखें। इसमें ऋद्धि और सिद्धि सहित श्रीमहागणेश जी विराजमान हैं। ऐसी भावना रखें।

४. व्रतधारी आँखे बन्द कर हाथ जोड़ कर संकल्प करें कि हे ॐकार के रूप श्रीमहागणेश! मैं (जिस कार्य के लिये व्रत करना हो वह कार्य बोलें।) के लिये शीघ्र फलदायी "श्री गणेश सिद्ध व्रत" आज से श्रद्धाभक्ति पूर्वक शुरू करती हूँ। यह व्रत मैं- ७-११-२१, ५१, या १०१ की गिनती में) अनन्त चतुर्थी तक करूँगी। आप मेरे मनोरथ शीघ्र ही पूर्ण करो और मेरे कष्ट हरो। हे सिद्ध गणपति देवा। व्रत के उद्यापन के समय पर मैं "श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत" के उद्यापन के समय पर मैं 'श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत' की..... (जितनी पुस्तक बाँटनी हो उसकी संख्या बोले।) पुस्तकें बाटुंगी।

५. व्रतधारी श्रीमहागणेश जी का आवाहन-पूजन आरम्भ करे। गेहूँ पर स्थापित की हुई मूर्ति या फोटो को शुद्ध जल से नहला कर पोंछ लें। तीन सुपारी को भी जल में नहला कर पोछ लें और सिक्के पर स्थापित करें। फिर श्रीमहागणेश जी के दाहिने अगूँठे पर और मस्तक पर कुमकुम का सिंदूर या हल्दी का तिलक करें। लाल फूल चढ़ाएं। इसी तरह तीन सुपारी की भी पूजा करें धूप-दीप जलायें। प्रसाद में श्रद्धानुसार घी या आटे के लड्डू का भोग लगाएं। बाद में श्रीमहागणेश जी को नमस्कार कर 'ॐ ह्रीं गं गणपतये नमः।" मंत्र ग्यारह बार बोलें।

६. इसके बाद श्रीमहागणेश जी का आवाहन पूजा करने के बाद यह पुस्तक में दी हुई कथा पढ़ें। बाद में 'श्री संकट नाशन गणपति स्तोत्रम्' बोलें। बाद में आरती करें।

७. अंत में व्रत में कोई भूल हुई हो तो उसकी क्षमा याचना करें। "हे ॐकार श्रीमहागणेश जी!" आपकी कृपा द्वारा मैंने आपका "श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत" पूरे भक्तिभाव और श्रद्धा से किया है। उसमें अगर कोई भूल हुई हो तो मुझे क्षमा करे और मेरे इस व्रत को स्वीकार करके मेरी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण करे। फिर 'ॐ ह्रीं गं गणपतये नमः' मंत्र को ग्यारह बार बोलें।

८. पूजा की समाप्ति के बाद जब ज्योत ठण्डी हो जाए तो श्रीमहागणेश जी की मूर्ति या फोटो को पूजा स्थान में रखें। तीन सुपारी, तीन सिक्के और लाल कपड़े को अलमारी में रखें। हर समय व्रत करते समय यही कपड़ा, सुपारी और सिक्को का उपयोग करे। अलमारी में सब चीजें इस तरह रखें कि मासिक धर्म वाली स्त्रियों, सूतकवाले व्यक्ति छू न सके। गेहूँ गाय को खिला दें। फूल-अक्षत वगैरह नदी, तालाब, या जलाशय में बहा दें। प्रसाद बाँट दें उसमें से थोड़ा प्रसाद अपने लिये रख लें। पहले प्रसाद खाये फिर एक स्थान पर बैठकर मौन रखकर खाना खाये।

5

श्री वक्रतुण्ड जी

हे वक्रतुण्ड गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

6

श्री एकदन्त जी

हे एकदन्त गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

7

卐 श्री महोदर जी 卐

हे महोदर गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

8

卐 श्री गजानन जी 卐

हे गजानन गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

9

卐 श्री लम्बोदर जी 卐

हे लम्बोदर गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

10

卐 श्री विकट जी 卐

हे विकट गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

11

श्री विघ्नराज जी

हे विघ्नराज गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले
सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

12

श्री धूम्रलोचन जी

हे धूम्रलोचन गणपति जी जगत का कल्याण करने वाले
सबकी झोलियां भरने वाले, मेरा भी कल्याण करना।

श्री सिद्ध महागणेश व्रत रखने के नियम

१. इस व्रत को यदि सौभाग्यवती स्त्री करे तो इसका फल अति उत्तम है। पुरुष और कुँवारी बालिकाएं भी इस व्रत को कर सकती है।

२. व्रत करने वाला प्राणी यदि विवाहित है तो पति पत्नी दोनों मिलकर इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करें तो इससे श्री गणपति देव शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

३. व्रत वाले दिन किसी भी प्रकार का छल कपट, पाप मन में नहीं आने दें। यानि व्रत वाले दिन अपने विचारो व मन को शुद्ध रखें।

४. यह व्रत हमारी सांसारिक सुख-समृद्धि के लिये हैं। इससे लाभ अवश्य होता है। इसलिये इस व्रत के सम्बंध में किसी भी प्रकार की शंका अथवा अमंगल विचार मन में नहीं लाना चाहिये।

५. इस व्रत में दक्षिणा के सिक्कों को एकत्रित करके कोई चाँदी की वस्तु खरीदकर घर में लाई जाये। और इस चाँदी की वस्तु को भी हर मंगलवार को व्रतपूजा के समय रखी जाये। तो तेजी से धनवृद्धि होती है।

६. इस व्रत का आरम्भ किसी भी मंगलवार से किया जा सकता है परन्तु भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन पूजन की गई सुपारियों का वस्त्र सहित विसर्जन

करना अनिवार्य है। उसके बाद आने वाले प्रथम मंगलवार को नई सुपारियाँ तथा नया वस्त्र लेना चाहिये।

७. किसी कारणवश किसी मंगलवार को घर पर न हों तब शाम के समय मानसिक रूप से पूजन करना चाहिए और कहीं से थोड़ा गुड़ लेकर प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिये।

८. समय हो तो श्री गणेश स्तुति का पाठ करना चाहिए या गणेश चालीसा का पाठ कर लेना चाहिए जो आगे पन्नों पर छपा हुआ है।

९. व्रत शुरू करने के बाद दूसरे या तीसरे (किसी एक) मंगलवार को सात महिलाओं का अपने घर बुलवा कर गुड़ या लड्डू का प्रसाद बाँटकर सिन्दूर का तिलक लगाकर, इस श्री सिद्ध गणेश व्रत की पुस्तिका और तीन-तीन सुपारी भेंट करनी चाहिए।

१०. श्री सिद्ध महागणेश व्रत अपनी इच्छानुसार ११, २१, ३१, ५१, १०१ रखने चाहिये।

श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत का उद्यापन

जितने भी व्रतों का संकल्प लिया हो। व्रत पूरे होने पर हर बार की तरह पूजन शास्त्रीय विधि द्वारा करे। गुड़, घी, आटे में डालकर लड्डू बनायें। और पूजा में रखें फिर जितना संकल्प किया हो उतनी पुस्तकें (११, २१, ३१, ५१, १०१) पुस्तकें स्त्री या पुरुष को बांटे। साथ में लड्डू

का प्रसाद लेना न भूले। पुस्तक देते समय श्रीमहागणेश सिद्ध यंत्र ''ॐ गं श्रीमहागणेशाय नमः'' मंत्र जरूर बोलें। अपनी श्रद्धानुसार ब्रह्म भोजन करायें। अगर न हो सके तो एक बालक को भोजन अवश्य करायें। एक लड्डू गाय को खिलायें फिर अंत में प्रसाद ग्रहण करने के बाद भोजन करे, भोजन मौन धारण कर करें।

उद्यापन के बाद तीन सुपारी लाल कपड़ा श्रीमहागणेश सिद्ध यंत्र 'ॐ गं श्रीमहागणेशाय नमः। बोल कर नदी, तालाब आदि में विसर्जन कर दें। सिक्के अलमारी, गल्ला या पूजा स्थान में रख लें। जिससे माँ लक्ष्मी का घर में सदा वास रहे।

श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत की कथा

सीतापुर गाँव में शिवनाथ नाम का एक ब्राह्मण रहता था। सम्पन्न और सुखी परिवार था। उनकी पत्नी सुधा एक धार्मिक प्रवृत्ति की एक सुघड़ गृहणी थी। उनके दो बच्चे थे। श्यामा और संजय। दोनों ही बुद्धिमान और सुशील थे।

शिवनाथ का जीवन सुख-शांति से व्यतीत हो रहा था और गाँव के लोग भी उसके परिवार को एक आदर्श व सुखी परिवार मानते थे किन्तु समय का चक्र बदला और उसके परिवार पर अचानक विपत्ति आ गई। उसकी पत्नी को कैंसर की भयानक बीमारी ने पकड़ लिया काफी महंगा इलाज कराने के बावजूद उसका स्वर्गवास हो गया। पुत्र संजय बुरी संगत में पड़ कर जुआ खेलने व शराब पीने

लगा। शादी करने लायक धन न रहा। कुछ तो पुत्री के विवाह की चिन्ता व पुत्र की कुसंगति में पड़ने के दुःख ने उसे कमजोर व उमर से अधिक वृद्ध बना दिया था। अब तो उसे पुत्री के हाथ पीले करने की चिंता सताती रहती थी।

एक दिन शिवनाथ का एक मित्र रामकुमार जो शहर में जा कर रहने लगा था। शिवनाथ से मिलने आया। उसकी गरीबी व चिंता को देखकर स्नेह भरे शब्दों में उसे आश्वासन दिया और कहा कि हरिद्वार के पास ऋषिकेश में एक कुटिया है। वहाँ शास्त्रों के ज्ञाता ज्योतिषी रहते हैं। उनके पास सब दुःख का निवारण है। वह अवश्य ही कोई हल बतायेंगे। जिससे तुम पहले जैसे सुखी हो जाओगे। लेकिन शिवनाथ के पास जाने के लिये किराया भी नहीं था। तब उसका मित्र रामकुमार उसे अपने साथ हरिद्वार ज्योतिषी के पास ले गया।

वह परमज्ञानी और सर्व शास्त्रों के जानकार और विद्वान पुरुष थे। वैसे ही दयालु प्रवृत्ति के थे। उन्होंने शिवनाथ को बैठाकर पूछा- कहो श्रीमान् आप कहाँ से आये हो। और किस समस्या को लेकर आये हो। तब शिवनाथ ने विस्तार पूर्वक अपनी बात बताई। और कहा कि आप तो शास्त्रज्ञाता और विद्वान हैं कृपा करके मेरे दुःखों का निवारण कर सही मार्गदर्शन करें। बड़ी आशा लेकर मैं आपके पास आया हूँ।

थोड़ी देर तो वह शास्त्रज्ञाता आखें बंद कर बैठे रहे। फिर बोले, हे ब्राह्मण! इस समय तुम्हारे परिवार पर दरिद्रयोग चल रहा है। तुम्हारी पुत्री पर मंगल ग्रह का प्रभाव है। इसी कारण उसके विवाह में अड़चन है और पुत्र पूर्व बुरे कर्मों के कारण गलत रास्ते में पड़ गया है।

यह सुन शिवनाथ ने शास्त्र पंडित के चरणों अपना सिर रख कर फूट-फूट कर रोने लगा और बोला महाराज मेरे दुःखों का निवारण आप ही करें। आप मेरे पर यह कृपा अवश्य करें वरना मैं आपके चरणों में ही प्राण त्याग दूँगा।

शिवनाथ के करूणा वचन सुनकर महाराज ने उसे सांत्वना दी और उपाय सोचने लगे। सोचने के बाद उन्होंने शिवनाथ को सर्व दुःखों को हरने वाला सर्वोत्तम और शीघ्र फल देने वाला 'श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत' करने की सलाह दी। और कहा कि इस इससे अवश्य ही तुम्हारे सब दुःखों का निवारण होगा। तब शिवनाथ के करवध हो कर 'श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत' की पूर्ण विधि पूछी।

शास्त्रज्ञाता ने कहा- हे ब्राह्मण! यह 'श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत' कलियुग में अद्‌भुत, चमत्कारिक और शीघ्र फलदायी व्रत है। तुम सच्ची श्रद्धा और भक्तिभाव से यह व्रत करोगे तो तुम्हारे सभी प्रकार के दुःखों का नाश अवश्य होगा। यह सर्व मनोकामना श्रीमहागणेश पूरी करते हैं। इस व्रत

के प्रभाव से विद्याहीन को विद्या, धनहीन को धन प्राप्ति, संतानहीन को संतान, और रोगियों के रोग दूर होते हैं। शनि व मंगल ग्रहों की पीड़ा शांत होती है। कुंवारी को मनचाहा पति और सुहागिन का सौभाग्य अखंड रहता है, भूत-प्रेत, जादू-टोना भी नष्ट होता है।

अतः हे ब्राह्मण! अब तू घर लौट जा और मंगलवार के दिन सूर्यास्त के बाद, एक लकड़ी की चौकी पर नया लाल कपड़ा अथवा कोरा रूमाल बिछाकर उस पर रोली लगाकर तीन सुपारी रखना। ये तीन सुपारी भगवान गणेशजी तथा उनकी शक्तियां सिद्धि तथा बुद्धि का प्रतीक रूप मानी जाती हैं। बीच में रखी सुपारी को श्रीमहागणेश जी माने और दोनों तरफ सिद्धि बुद्धि का प्रतीक समझ विराजमान करें। ऐसा माना जाता है। तीनों सुपारियों को बारी-बारी शुद्ध जल या गंगाजल से बारी-बारी स्नान करायें। बाद में रोली का तिलक करके लाल रंग के फूल चढ़ाएं।

भगवान् श्रीमहागणेश जी को प्रसाद के रूप में गुड़, घी के लड्डू अतिप्रिय हैं। यदि तीन लड्डू सम्भव न हो तो गुड़ का तीन जगह प्रसाद के रूप में रखें। घी का दीपक, अगरबत्ती, धूपबत्ती, सुलगा कर रखें फिर भगवान सिद्धि गणेश की कथा करके आरती करें।

आरती के बाद भगवान् के पास दक्षिणा स्वरूप तीन ५, २ या १ के सिक्के रखने चाहिये। घर के सभी सदस्यों

को आरती लेकर गुड़ अथवा लहू का प्रसाद ग्रहण करना चाहिए। उसके बाद व्रतधारी प्रसाद ग्रहण करके भोजन कर लें।

बाद में पूजन की गई तीन सुपारी और दक्षिणा को उसी लाल कपड़े या रूमाल में लपेट कर अलमारी या गल्ले में रख दें। पूजा मन्दिर या पूजा स्थान पर रखें। सुपारी का कपड़ा हर बार न बदले। उन्हीं सुपारियों तथा कपड़े का उपयोग करें और आरती करने के बाद जो दक्षिणा के रूप में तीन सिक्के रखते हैं उन्हें एकत्रित होने दे। इससे धन धान्य एवं समृद्धि की वृद्धि होती हैं।

यह व्रत महीने में कृष्ण चतुर्थी या हर मंगलवार को कर सकते हैं। शक्ति न हो तो उपवास न करके केवल पूजा-अर्चना भी की जा सकती है।

घर लौट कर आते मंगलवार को ही शिवनाथ ने 'श्री सिद्धि महागणेश व्रत' की तैयारी आरम्भ की और व्रत रखा, तीसरे प्रहर शास्त्रज्ञाता के बताये अनुसार पूजा-अर्चना की और ग्यारह मंगलवार के व्रत का संकल्प किया। जिससे दूसरे मंगलवार को ही उसके पुत्र संजय को सरकारी कार्यालय में नौकरी मिल गई। और श्रीमहागणेश जी की कृपा से गलत संगत छोड़ कर पिता की देखभाल करने लगा और अपने पुराने कुसंगति के कर्मों का पश्चाताप कर पिता से माफी मांगी। पांच मंगल ही बीते थे कि

उसकी पुत्री श्यामा को सुशील, सुन्दर व धनवान वर मिला। और शीघ्र ही शिवनाथ ने उसकी शादी कर दी। इस तरह शिवनाथ के दुःख के बादल छटे और घर में फिर पहले की तरह सुखशान्ति हो गई।

शिवनाथ ने इक्कीस मंगलवार व्रत करने का संकल्प किया था। इक्कीसवी मंगलवार को उसने स्वामी के कहे अनुसार विधिपूर्वक व्रत का उद्यापन किया। 'श्री सिद्ध महागणेश व्रत' का चमत्कार देखकर अड़ोस-पड़ोस के लोग भी करने लगे। और सबके कष्ट दूर होने लगे और सब व्रतधारियों के घर-परिवार में सुख शान्ति होने लगी। तो हर कोई अपने परिवार की सुख-शान्ति के लिये हर साल 'श्रीमहागणेश सिद्ध व्रत' करने लगे।

'हे ॐकार के स्वरूप' श्री सिद्ध महागणेश जी! आप जैसे शिवनाथ पर प्रसन्न हुए इसी तरह इस व्रत करने वाले हर प्राणी पर प्रसन्न होना, उनके सब दुःखों का नाश कर उनकी सभी मनोकामना पूरी करना।

जय श्री महासिद्ध गणेश नमः।

Shri Maha Ganesha Sidh Vrat